ओ३म्

# सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 65 अंक 7 मार्च 2018 चैत्र 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

**पं. लेखराम जी आर्यपथिक**
बलिदान : 6 मार्च 1897 ई.

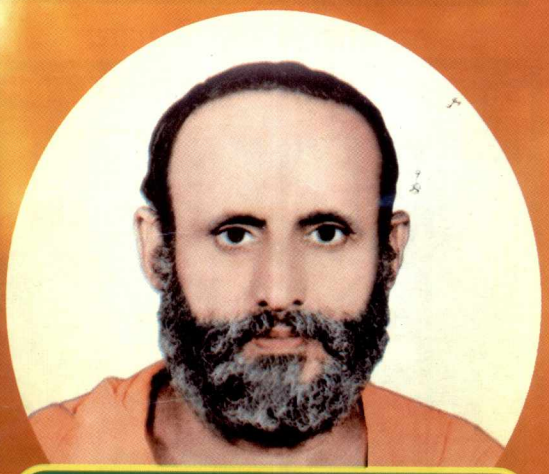

**स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती**
जन्म : 22 मार्च 1911 ई. - निधन : 23 मार्च 2003 ई.

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर
भारत सरकार द्वारा जारी किया गया
डाक टिकट सन् 1975 ई.

आर्यसमाज स्थापना के 125वें वर्ष में
भारत सरकार द्वारा जारी किया गया
डाक टिकट सन् 2000 ई.

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

# 102 वें वार्षिक महोत्सव की चित्रमय झांकी

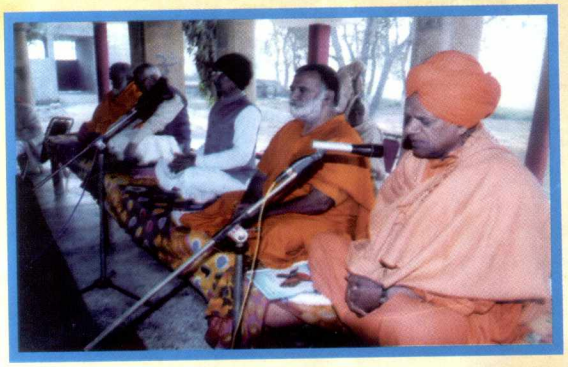

यजुर्वेद पारायण यज्ञ के समय
डॉ. देवव्रत स्वामी जी उपदेश देते हुए।

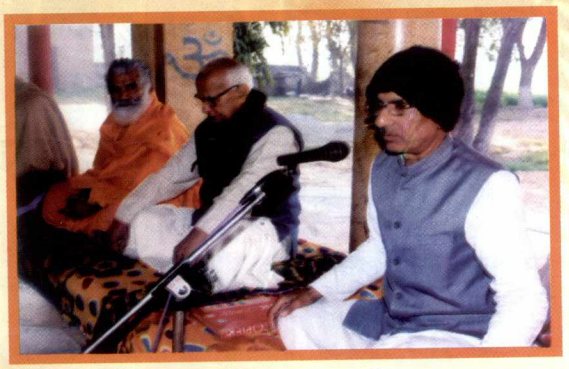

यजुर्वेद पारायण यज्ञ के समय
ब्रह्मा डॉ. जगदेव जी उपदेश देते हुए।

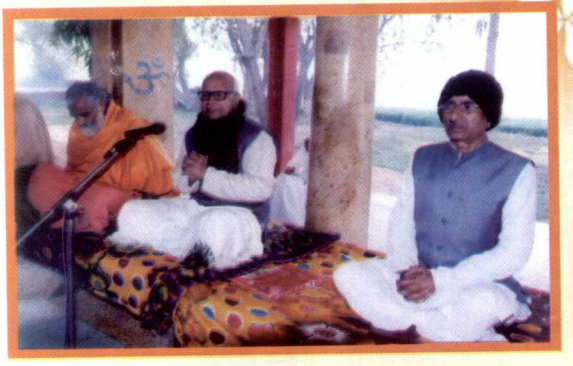

यजुर्वेद पारायण यज्ञ के समय
प्रो. ओम् कुमार जी उपदेश देते हुए।

गुरुकुल के प्रधान चौ. पूर्णसिंह देशवाल स्वामी
सुमेधानन्द जी सांसद का स्वागत करते हुए।

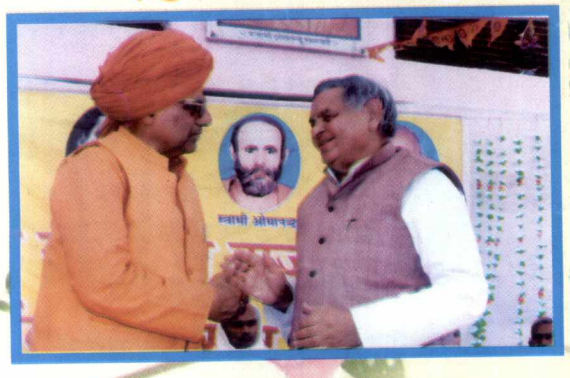

गुरुकुल झज्जर के कुलपति डॉ. योगानन्द जी
शास्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी से चर्चा करते हुए।

गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी
योगार्थी स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मन्त्री आर्य
प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का स्वागत करते हुए।

मंच पर आसीन डॉ. जयभारती, आनन्द सागर जी एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

हरियाणा के कृषि मन्त्री श्री ओम्प्रकाशजी धनखड़ भाषण देते हुए।

हरियाणा के कृषि मन्त्री श्री ओम्प्रकाशजी धनखड़ जनता को सम्बोधित करते हुए।

डॉ. चन्द्रकेतु आयुषविभाग दिल्ली भाषण देते हुए।

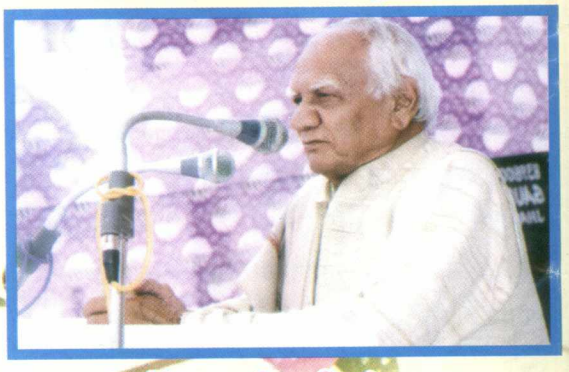

डॉ. महावीर मीमांसक दिल्ली भाषण देते हुए।

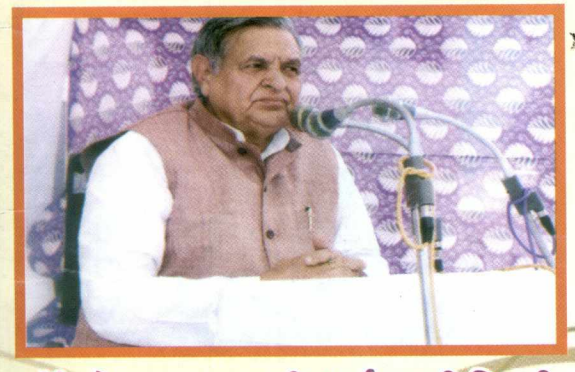

डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व मन्त्री दिल्ली सरकार) भाषण देते हुए।

स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर
जनता को उद्‌बोधन करते हुए।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी महेन्द्रगढ़
उपदेश देते हुए।

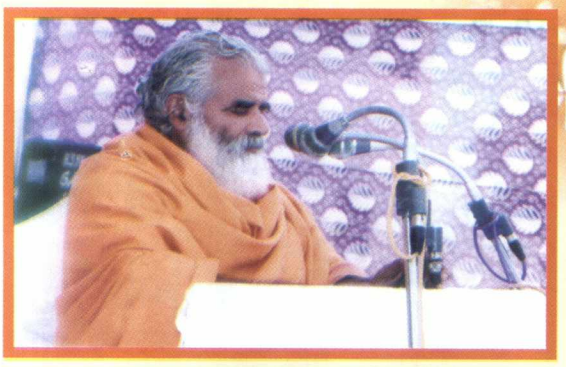

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी
उपदेश देते हुए।

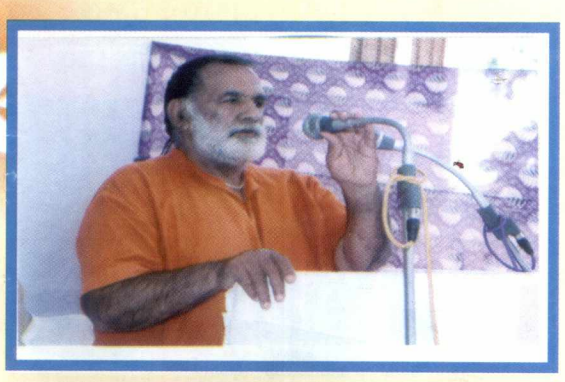

आचार्य विजयपालजी कृषि मंत्री
हरयाणा के सम्मुख गुरुकुल की
आवश्यकताओं का वर्णन करते हुए।

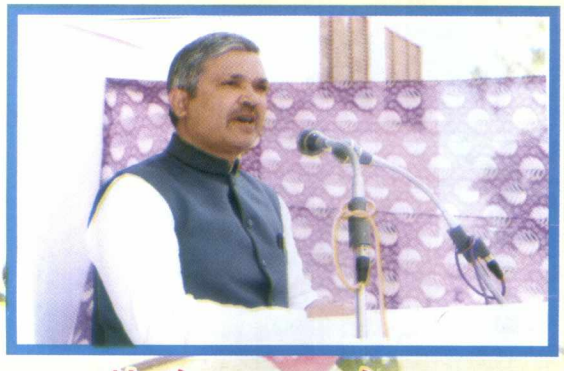

डॉ. सुरेन्द्र कुमार (रोहतक)
उपदेश देते हुए।

डॉ. राजकुमार आचार्य (झज्जर) दान
राशि सुनाते हुए।

# सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में काग़ज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक


वर्ष : 65 अंक : 7
मार्च 2018 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 194 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118


## विषय-सूची


| क्र.सं. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | आर्याभिविनयः | 2 |
| 2. | सम्पादकीय | 3 |
| 3. | धर्मवीर पं. लेखराम | 4 |
| 4. | श्रीस्वामी ओमानन्द सरस्वती..... | 8 |
| 5. | वेदाविर्भाव-पद्धति | 9 |
| 6. | एक अनुकरणीय जीवन परिचय | 14 |
| 7. | गुरुकुल झज्जर का 102वां उत्सव.... | 16 |
| 8. | भूत-प्रेत आदि का स्वरूप | 18 |
| 9. | ऐसी भी हैं वैदिक सिद्धान्तसिक्त..... | 21 |
| 10. | एक ग्राम का आदर्श निर्णय | 22 |
| 11. | गुरुकुल में प्रवेश सूचना | 23 |
| 12. | दुःखद समाचार | 24 |


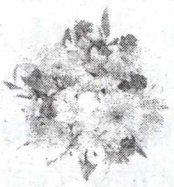

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

## आर्याभिविनयः

### स्तुति-विषय

**य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वद्**
**ऋषिर्होता न्यसीदत् पिता नः।**
**स आशिषा द्रविणमिच्छमानः**
**प्रथमच्छदवराँ२ऽआविवेश।। 30।।**

यजु० 17। 17।।

**व्याख्यान**— ( **होता** ) उत्पत्ति-समय में देने और प्रलय-समय में सबको लेनेवाला परमात्मा ही है। ( **ऋषिः** ) सर्वज्ञ [ ( **इमाः०** ) ] इन सब लोक-लोकान्तर भुवनों का अपने स्वसामर्थ्य[1]=कारण में होम=प्रलय करके ( **न्यसीदत्** ) नित्य अवस्थित रहता है। सो ही हमारा पिता है। फिर जब ( **द्रविणम्** ) द्रव्यरूप जगत् को [ ( **इच्छमानः** ) ] स्वेच्छा से उत्पन्न किया चाहता है, उस ( **आशिषा** ) सामर्थ्य से यथायोग्य विविध जगत् को सहजस्वभाव से रच देता है। चराचर ( **प्रथमच्छत्** ) विस्तीर्ण जगत् को रचके अनन्त-स्वरूप आच्छादित किया है। और अन्तर्यामी साक्षीस्वरूप [उसमें] प्रविष्ट होरहा है, अर्थात् बाहर और भीतर परिपूर्ण हो रहा है। वही हमारा निश्चित पिता है। उसकी सेवा छोड़के जो मनुष्य अन्य पाषाणादि मूर्ति की सेवा करता है, वह कृतघ्नत्वादि महादोषयुक्त होके सदैव दुःखभागी होता है। और जो मनुष्य परमदयामय पिता की आज्ञा में रहता है, वह सर्वानन्द का सदैव भोग करता है।। 30।।

### प्रार्थना-विषय

**इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व**
**क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व।**
**धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय**
**ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय।। 31।।**

यजु० 38। 14।।

**व्याख्यान**— हे सर्वसौख्यप्रदेश्वर! ( **इषे०** ) उत्तमान्न के लिये पुष्ट कर, अन्न के अपचन के रोगों से बचा। तथा विना अन्न के दुःखी हम लोग कभी न हों। हे महाबल! ( **ऊर्जे०** ) अत्यन्त पराक्रम के लिये हमको पुष्ट कर। हे वेदोत्पादक! ( **ब्रह्मणे०** ) सत्य वेदविद्या के लिये बुद्ध्यादि बल से सदैव हमको पुष्ट और बलयुक्त कर। हे महाराजाधिराज परब्रह्मन्! ( **क्षत्राय०** ) अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिये शौर्य धैर्य नीति विनय पराक्रम आर बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट कर। **अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।** स्वर्ग=परमोत्कृष्ट मोक्षसुख, पृथिवी=संसारसुख इन दोनों के लिये हमको समर्थ कर। [ ( **धर्मा०** ) ] हे सुष्ठुधर्मशील! तुम धर्मकारी हो, तथा धर्मस्वरूप ही हो, हम लोगों को भी कृपा से धर्मात्मा कर। ( **अमेनि** ) तुम निर्वैर हो, हमको भी निर्वैर कर। तथा कृपादृष्टि से ( **अस्मे** )=अस्मभ्यम्=हमारे लिये ( **नृम्णानि** ) विद्या पुरुषार्थ हस्ती अश्व सुवर्ण हीरादि रत्न उत्कृष्ट राज्य उत्तम पुरुष और प्रीत्यादि पदार्थों को धारण कर। जिससे हम लोग किसी पदार्थ के विना दुःखी न हों। [ ( **ब्रह्म धारय०** ) ] हे सर्वाधिपते! [ ब्रह्म= ] ब्राह्मण=पूर्णविद्यादि सद्गुणयुक्त, क्षत्र=बुद्धि विद्या तथा शौर्यादिगुणयुक्त, विश=अनेकविधोद्यम बुद्धि विद्या धन और धान्यादि वस्तुयुक्त, तथा शूद्रादि भी सेवादिगुणयुक्त, ये सब स्वदेशभक्त उत्तम हमारे राज्य में हों। इन सबका धारण आप ही करो। जिससे अखण्ड ऐश्वर्य हमारा आपकी कृपा से सदा बने रहे।। 31।।

सम्पादकीय....

# आर्यसमाज का स्थापना दिवस और उसके प्रथम द्वितीय एवं तृतीय नियम

सन् 1875 को 10 अप्रैल के दिन अर्थात् चैत्रशुक्ला पंचमी के दिन ऋषि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसके प्रमाणस्वरूप ऋषि जी पत्र द्वारा सूचित करते हैं-

स्वस्ति श्रीमच्छ्रे ष्ठोपमायुक्तेभ्य: श्रीयुतगोपालरावहरिदेशमुखादिभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम्। शमिहास्ति, तत्राप्यस्तुतमाम्। आगे मुम्बई में चैत्रशुद्ध 5 शनिवार के दिन सन्ध्या के साढे पांच बजते आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ। आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिये। विलम्ब मत कीजिये। नासिक में भी होने वाला है। अब आर्यसमाजार्थ [नियम] और संस्कार विधान का पुस्तक वेदमन्त्रों से बनेगा...संवत् 1931 मिती चैत्र शुद्ध 6 रविवार।

इतना पुष्टप्रमाण होते हुए भी कुछ व्यक्ति चैत्रशुक्ला प्रतिपदा को स्थापना दिवस मनाने का व्यर्थ आग्रह किया करते हैं और प्रमाणस्वरूप यह कहते हैं कि आर्यसमाज काकड़वाड़ी मुम्बई में जो शिलालेख लगा हुआ है, उसमें यही तिथि अंकित है। ज्ञात होवे कि यह शिलालेख आर्यसमाज का भवन बनने के सात वर्ष पश्चात् लगाया गया है, इसके साथ लगे अन्य शिलालेखों से भी यह स्पष्ट है। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा ने सन् 1939 के पश्चात् चैत्रशुक्ला प्रतिपदा के दिन स्थापना दिवस मनाने का आदेश जारी करके ऐतिहासिक भूल की हुई है इसका संशोधन होना चाहिये। नयेसंवत् के प्रारम्भ के साथ आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने का भावुकता भरा निर्णय अमान्य होना चाहिये।

अत: विश्व के सभी आर्यसमाजों को चाहिये कि अपना आदिम जन्म समय शुद्ध करके चैत्र शुक्ला पंचमी को ही मनाना चाहिये, इसके लिए ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र की विद्यमानता ही सर्वोत्तम प्रमाण है।

आर्यसमाज का प्रथम नियम आजकल इस रूप में प्रकाशित हो रहा है-सब **सत्यविद्या** और जो **पदार्थ विद्यासे** जाने जाते हैं; उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

इस निमय में विचारणीय है कि **सत्यविद्या** और **विद्या** ये दो विद्यायें कौन-सी हैं। कुछ इन्हें परा और अपरा विद्या से जोड़ते हैं; यह समाधानाभास है। सत्यविद्या के साथ पढा विद्या पद क्या असत्य विद्या है? विद्धातु से बना विद्यापद ज्ञानवाची है, इसमें सत्यपदयुक्त विद्या और केवल विद्यापद में अर्थ और भाव की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है।

मेरे विचार से प्रथम नियम में पठित शब्दों का अभिप्राय आगे प्रदर्शित वाक्यरचनानुसार होना चाहिये-

सब **सत्य, विद्या** और जो **पदार्थविद्या** से जाने जाते हैं...इत्यादि। अर्थात् इस संसार में सत्य के जानने के दो साधन हैं **विद्या** और **पदार्थविद्या**। जो इन दोनों साधनों से सिद्ध है वही सत्य है। विद्या=ज्ञान, थ्योरी और पदार्थविद्या=क्रियात्मक=प्रैक्टीकल। जैसा ज्ञान लिखित रूप में है, वह क्रियात्मक रूप से भी सिद्ध होना चाहिये।

महर्षि दयानन्दजी अपने वेदभाष्य, पत्रव्यवहार तथा चतुर्वेदविषयसूची में पदार्थविद्या की चर्चा अनेक बार करते हैं, उसका अभिप्राय है कि वेद में जो ज्ञान दिया है उसे पदार्थविद्या से अर्थात् क्रियात्मक रूप से भी सिद्ध करना चाहिये।

द्वितीय नियम में **नित्य** और **पवित्र** इन को दो पद मानकर छापते हैं, जबकि '**नित्यपवित्र**' एक शब्द होना चाहिये, क्योंकि ईश्वर सदा से ही पवित्र है। ऐसा नहीं है कि पहले पवित्र नहीं हो और बाद में पवित्र हुआ हो। इसी नियम में अनादि, अमर आदि पदों की विद्यमानता में अकेला नित्य शब्द पढना पुनरुक्ति प्रदर्शित करता प्रतीत होता है। अत: **नित्यपवित्र** एक शब्द माना जाना चाहिये। इस नियम में **सर्वज्ञ** शब्द का अभाव भी खटकता है। यदि सर्वप्रथम नियमों भी मूलप्रति मिलनी सम्भव हो तो उससे भी इस जिज्ञासा का समाधान सम्भव है।

तृतीय नियम में वेद **सब** सत्य विद्याओं का पुस्तक है...। यहां **सब** शब्द सन् 1915 के पश्चात् प्रकाशित नियमों में किसी ने बढाया है। इससे पूर्व के प्रकाशित सब ग्रन्थों में **वेद सत्य विद्याओं** का पुस्तक है यही छपा मिलता है। इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिये कि सचाई क्या है?

कर्नल अल्काट आदि को भी **सब** शब्द के प्रति आपत्ति थी। वे तो वेद को ईश्वरप्रदत्त ज्ञान मानने को भी तैयार नहीं थे इसी कारण थियोसोफिकल सोसायटी से ऋषि दयानन्दजी ने सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था।

आशा है आर्य विद्वज्जन इस विषयों में विचार विमर्श करके वस्तुस्थिति से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

-विरजानन्द दैवकरणि

# धर्मवीर पं० लेखराम

लेखक- आनन्ददेव शास्त्री,
पूर्व प्रवक्ता ( संस्कृत ), दिल्ली सरकार

आर्य मुसाफिर धर्मवीर पं० लेखराम जी का जन्म अविभाजित पंजाब (पाकिस्तान) के झेलम जिले के एक अप्रसिद्ध गांव, सैदपुर में एक सारस्वत ब्राह्मण कुल में 8 सौर सम्वत् 1915 विक्रमी शुक्रवार के दिन हुआ। आपके पिता का नाम महता तारासिंह था। आपके दादा का नाम महता नारायणसिंह था। आपके दादा सिक्खों के युद्धों के योद्धा थे, वही क्षात्र तेज आप में भी विद्यमान था। आप बाल्यकाल से ही भावुक तथा धार्मिक थे। आपने ग्यारह वर्ष की अवस्था में श्रद्धा से एकादशी का व्रत रखना प्रारम्भ कर दिया था। आपको बाल्यकाल में केवल उर्दू तथा फारसी की ही शिक्षा मिली थी। यह शिक्षा आगे चलकर आपके मोहम्मदीमत खण्डन में बडी काम आई। आप बचपन से ही स्वतन्त्रताप्रिय, प्रत्युत्पन्नमति तथा प्रत्युत्तरप्रवीण थे।

आप विक्रमी सं० 1932 के पौष मास में अपने चाचा गंडाराम इन्सपेक्टर पुलिस की सहायता से पेशावर पुलिस में सार्जेन्ट पद पर नियुक्त हुए। आप प्रतिदिन स्नान कर ध्यानपूर्वक गीता का पाठ किया करते थे। आप जीव ब्रह्म एकता के विश्वासी थे। आपके पिता ने आपका 21 वर्ष की आयु में विवाह करना चाहा किन्तु आपने मना कर दिया। उन्हीं दिनों आप को लुधियाना के मुन्शी कन्हैय्यालाल अलखधारी

की पुस्तक पढने से, महर्षि दयानन्द के आर्यधर्म प्रचार तथा आर्यसमाज के विषय में ज्ञान हुआ था। आपने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ मंगाकर पढने प्रारम्भ किये जिससे आप आर्यसमाजी बन गये।

वैदिकधर्मी बन पं० लेखराम ने सीमा प्रान्त के यवनबाहुल्य पेशावर नगर में आर्यसमाज की स्थापना की तथा वहां आप तथा आपके चार पांच साथी ही आर्यसमाज के सर्वस्व थे। आपको जीव-ब्रह्म एकता के विषय में कुछ शंका थी, अत: उस शंका के निवारणार्थ आपने साढे चार वर्ष की नौकरी के बाद एक महीने की छुट्टी ली तथा 17-5-1980 ईस्वी (सम्वत् 1937) को अजमेर पहुंच सेठ फतहमल की वाटिका में पहुंच महर्षि दयानन्द जी के प्रथम तथा अन्तिमवार दर्शन किये तथा अपनी शंकाओं का समाधान किया। तब से आपके विचार आर्यसमाज के प्रति बहुत ही दृढ हो गये।

अजमेर से लोटकर आपने दिन रात आर्यसमाज का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। आपने आर्यसमाज पेशावर की तरह से ''धर्मोपदेश'' नामक अखबार निकालना प्रारम्भ कर दिया तथा साथ-साथ व्याख्यान भी देते रहे। इसके बाद आप की कई स्थानों पर बदली हुई। आपकी धार्मिक लगन के कारण विधर्मी पुलिस अधिकारी आपसे ईर्ष्या करने लगे। उधर पंडित जी को नौकरी करना पसन्द न था अत: 24-7-1884 (वि०सं 1941) को आपने पुलिस सेवा से त्यागपत्र दे दिया। दो महीने बाद आपका त्यागपत्र स्वीकृत हुआ तथा आपको पुलिस सेवा से मुक्ति मिल गई।

एक तरफ आप विधर्मियों की पुस्तकों का उत्तर लिखते रहते साथ ही दिनरात प्रचार भी करते रहते अत: आप का नाम ''आर्य मुसाफिर'' प्रसिद्ध हो गया।

आप ने पुस्तक लेखन की शुरुआत अहमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक जि० गुरुदासपुर निवासी, मिर्जा गुलाम अहमद के साथ संघर्ष से हुई। मिर्जा ने एक पुस्तक ''बुराहीन-ए-अहमदिया' लिखी, जिसमें आर्यसमाज पर कटु आक्षेप थे। आपने उसके उत्तर में ''तकजीब-बुराहीन-ए-अहमदिया लिखी। मिर्जा ने फिर अनुचित आक्षेपयुक्त ''सुर्म-ए-चश्म-अरिया'' लिखा। जिसके उत्तर में आपने युक्तिपूर्ण ''नुसव-ए-खब्त-अहमदिया'' ग्रन्थ लिखा। मिर्जा ने घोषणा की कि मेरे पास ईश्वर के दूत आते हैं तथा मैं चमत्कार दिखा सकता हूं तथा जिस मनुष्य को मृत्यु के लिये ईश्वर से प्रार्थना करूंगा वह एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। यदि मैं ये दोनों कार्य नहीं कर सकूं तो, कोई भी मेरे पास एक वर्ष रहकर परीक्षण कर ले, मैं उस व्यक्ति को 200 रुपये मासिक की दर से 2400 रुपये दूंगा तब पं० लेखराम ने मिर्जा से 2400 रुपये जमा करने

को कहा तब मिर्जा अपने वायदे से मुकर गया। तब पंडित जी स्वयं मिर्जा के पास गये तथा उसे निरुत्तर कर दिया, जिससे मिर्जा का प्रभाव जनता से हट गया। पंडित जी का अहमदिया के साथ यह विवाद ही अन्त में उनकी मृत्यु का कारण बना।

पंडित जी के अन्दर वैदिक धर्म के प्रति इतना उत्साह था कि जहां कहीं भी कोई हिन्दू धर्म परिवर्तन करता सुना जाता, पंडित जी शीघ्र ही वहां पहुंच जाते तथा हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचा लेते। ईसाई लोग तो कुछ सहिष्णु तथा सभ्य होने के कारण उनके उत्तरों पर चुप हो जाते, किन्तु मुस्लिम क्रोधान्ध हो लड़ने पर उतारू हो जाते थे।

पंडित जी निस्पृह त्यागी तथा संतोषी थे। वे केवल 25 रुपये मासिक बाद में 35 रुपये मासिक लेकर दिनरात आर्यसमाज के लिये कार्य करते थे। उन्होनें 36 वर्ष भी आयु में ज्येष्ठ सम्वत् 1950 मरी पर्वत अन्तर्गत भन्न ग्राम निवासिनी कुमारी लक्ष्मी देवी से विवाह किया। तथा विवाह के बाद ही अपनी पत्नी को पढाना प्रारम्भ कर दिया। आप उसे भी उपदेशिका बनाना चाहते थे। सम्वत् 1952 के ग्रीष्म ऋतु में उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम सुखदेव रक्खा गया। आप पत्नी को भी उपदेशार्थ अपने साथ ले जाने लगे, जिसके कारण मां बेटे भी सम्भाल ठीक से न हो सकी, अतः बालक सुखदेव डेढ वर्ष की आयु में चलबसा।

उन्हीं दिनों पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का खोज करके जीवन चरित्र लिखने का कार्य पंडित जी को सोंपा। इस कार्य के लिए आप एक स्थान से दूसरे स्थान पैदल भी घूमे तथा जहां से भी ऋषि जीवन से सम्बन्धित कुछ सामग्री मिली संग्रह किया, प्रत्यक्षदर्शी लोगों के बयान लिये तथा उन्हें लिपिबद्ध किया। जो लेख अन्य भाषाओं में थे उनका अनुवाद अपने मित्रों से कराया। महर्षि के जीवन से सम्बन्धित वह सामग्री बहुत अधिक मात्रा में तथा प्रामाणिक थी। बाद मे महर्षि के सभी जीवनी लेखकों ने उसी सामग्री का अधिकतर प्रयोग किया। इस प्रकार महर्षि के जीवन से सम्बन्धित सामग्री संग्रह में पंडित जी का परिश्रम तथा सहयोग अपूर्व है। आपने वैदिक धर्म प्रचार के लिये दिन-रात इतनी यात्राएं की कि जिसके कारण आपका "आर्य पथिक नाम" सार्थक हो गया।

मोहमदी लोग पं० लेखराम से पहले ही द्वेष रखते थे। उन्होंने पंडित जी पर जी दुःखाने तथा अश्लील लिखने के अभियोग मिर्जापुर, इलाहाबाद, लाहौर, मेरठ, दिल्ली, बम्बई की फौजदारी अदालतों में दायर किये थे किन्तु न्यायाधीशों को पंडित जी के लेख में ऐसी कोई बात नहीं मिली। अतः पं० जी को अदालत में बिना बुलाये ही उनके मुकदमे खारिज कर दिये। इस बात से मुसलमान और अधिक चिढ

गये तथा पंडित लेखराम जी को जान से मारने की धमकियाँ मिलने लगी किन्तु पंडित जी भय का नामोनिशान भी नहीं जानते थे। उन्हें परमपिता परमेश्वर पर अटल विश्वास था अत: लोगों के बार बार सावधान करने पर भी अपनी रक्षा की तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया।

अन्त में फरवरी सन् 1897 (सम्वत् 1953) विक्रमी के मध्य भाग में एक काला गठीने शरीर का नाटा मुसलमान युवक उनके पास आया तथा हिन्दू बनने की इच्छा प्रकट की। आप तो इस कार्य के लिये हर समय कटिबद्ध रहते थे। आपने उसे प्रेमपूर्वक अपने पास बिठाया तथा धर्मोपदेश देने लगे। इस व्यक्ति की आंखों में क्रूरता थी। कई लोगों ने पंडित जी को इससे सावधान रहने को भी कहा किन्तु आपने उन लोगों की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया तथा उनकी बात टाल दी। एक दिन शाम के समय जब पंडित जी स्वामी दयानन्द के परम पद प्राप्ति का वर्णन समाप्त करके उसे उसी समय जैसे ही अंगडाई ली, उस नीच मुसलमान ने आपके पेट में कटारी घोंप दी। जिससे उनकी आंतों में आठ मारक घाव लगे तथा उन घावों से आधीरात तक खून बहता रहा। लाहौर के सिविल सर्जन डॉ० पैरी आपके घावों को दो घंटे तक सीत्ते रहे फिर भी पंडित जी के प्राण न बच सके। तथा फाल्गुन सुदी 3 सम्वत् 1953 विक्रमी तदनुसार 6 मार्च 1897 ई० को रात्री के 2 बजे इस नश्वर शरीर को वैदिक धर्म पर बलिदान करके स्वर्ग सिधार गये। प्राण त्यागने से पूर्व आपकी चेतना में कोई अन्तर नहीं आया था। आप निरन्तर गायत्री तथा विश्वानि देव मन्त्र का जाप करते रहे। उस समय उनको न घरवालों की चिन्ता थी, न घातक पर अप्रसन्नता तथा न ही मृत्यु का भय था। यदि चिन्ता थी तो आर्यसमाज की तथा आर्यसमाज के लेखन कार्य की। आपने अपने साथियों को अन्तिम संदेश दिया कि "आर्यसमाज से लेख का कार्य बन्द नही होना चाहिये"। इस प्रकार वैदिक धर्म पर बलिदान होकर पंडित जी शहीदों की पंक्ति में अपना नाम अमर कर गये वहीं आर्यसमाज रूपी पौधे को अपने खून से सींच हराभरा कर गये। यदि पं० लेखराम जी के साथ अन्त समय में यह दुर्घटना नहीं होती तो उनकी शवयात्रा में तीस हजार के स्थान पर तीन हजार जनता भी नहीं होती। उस अवस्था में उन्हें आर्यसमाज से बाहर का कोई व्यक्ति नहीं जानता।

पं० लेखराम जी के स्वभाव का वर्णन यदि संक्षेप में करना हो तो वे अत्यन्त त्यागी, सरल स्वभाव, प्रतिज्ञापालन के पक्के, तेजस्वी, सुलेखक तथा आदर्श धर्मप्रचारक थे। इस प्रकार के गुणों से सम्पन्न, पूज्य पं० लेखराम जी "आर्यपथिक" को शतश: नमन।

**सम्पर्क सूत्र**
**111/19 आर्यनगर, झज्जर**
**मो० 9996227377**

# श्रीस्वामी ओमानन्द सरस्वती स्मृति दिवस पर विशेष

1. जब सन् 1942 में स्वामी ओमानन्द जी ने आचार्य भगवान्देव के रूप म जीर्णशीर्ष गुरुकुल झज्जर को सम्भाला तो उनके सामने गुरुकुल कांगड़ी का दृश्य था। स्वामी जी ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्दजी ने अपना सर्वरूप दान देकर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे चलाना प्रारम्भ किया, परन्तु साराधन आर्यप्रतिनिधि पंजाब को सौंप दिया कि सभा गुरुकुल का संचालन करेगी, परन्तु सभा के अधिकारी आर्षपाठविधि के समर्थक नहीं थे अत: स्वामी श्रद्धानन्दजी को गुरुकुल कांगड़ी छोड़ना पडा।

इसी से शिक्षा लेकर गुरुकुल झज्जर की विद्यार्यसभा के अधिकारों को अत्यन्त सोमित करके सारा प्रबन्ध अपने हाथ में रखा इसीलिये इतना अधिक कार्य कर पाये, सभा के अधिकार में रहते तो सभा मनमाने ढंग से चलाने का प्रयास करती और प्रत्येक कार्य में व्यवधान डाल सकती थी।

2. स्वामी ओमानन्दजी की हार्दिक इच्छा थी कि आर्षपाठविधि का अधिक से अधिक प्रचार हो, स्कूली शिक्षा को वे आर्यसमाज के लिए हितकर नहीं मानते थे।

3. महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों और उनके ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार होना चाहिये।

4. स्कूल कालेजों में बालकों के चरित्र की रक्षा हेतु ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर लगाये जायें।

5. प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना हो और उनमें ग्रहस्थाश्रम से निवृत्त व्यक्ति वानप्रस्थ संन्यास दीक्षा लेकर रहें और युवकों को आर्यसमाज के प्रति जागरूक करें। ऐसे व्यक्ति अपने ग्राम में न रहकर दूसरे ग्रामों के आर्यसमाजों में रहें।

6. आर्यसमाज में रहते हुए आयुर्वेद पद्धति से चिकित्सा करके लोगों को लाभ पहुंचाये।

7. अंग्रेजों ने भारत के प्राचीन इतिहास का कालक्रम जानबूझ कर बिगाड़ा है इसे सप्रमाण शुद्धरूप में स्थापित करना चाहिये।

8. भारत के कई प्रान्तों के लोगों की धारणा है कि हरयाणा में कृषि संस्कृति के अतिरिक्त और कोई संस्कृति कभी नहीं रही। इस भावना के प्रत्याख्यान हेतु स्वामी जी ने गुरुकुल में पुरातत्त्व संग्रहालय का निर्माण किया और अपने अन्वेषण से भारत से बाहर भी जापान, रूस, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, नैरोबी, मारीशस आदि 21 देशों में गुरुकुल झज्जर की ख्याति करके हरयाणा की प्राचीन संस्कृति की छाप अंकित की।

9. गुरुकुल में अध्ययन करने वाले छात्र ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर देश विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार करें

10. आर्यसमाज के स्थायी प्रचार हेतु सद्ग्रन्थों का प्रकाशन करके उनका प्रचार-प्रसार करना।

11. दैनिक व्यायाम, सन्ध्या, यज्ञ करने वाले गृहस्थ परिवार तैयार करना। स्वामी ओमानन्दजी की इस प्रकार की भावनायें थी, गुरुकुल झज्जर के स्नातकों का कर्त्तव्य है कि जिस-जिस विषय में जिसकी रुचि हो उसी विषय में लगकर प्रचार-प्रसार किया जाये। तभी स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अन्यथा प्रतिवर्ष 22-23 मार्च को नाममात्र हेतु स्मरण करके कर्त्तव्य की इति श्री मान लेना विशेष श्रेयस्कर प्रतीत नहीं होता।

# वेदाविर्भाव-पद्धति

( आचार्य श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री, गाजियाबाद )

भारतीय राष्ट्र व समाज की संस्कृति का आधार है-वेद। आज विश्व में संस्कृति के विभिन्न रूप उपलब्ध हैं। पर वे सब वैदिक संस्कृति से विच्छिन्न होकर विभिन्न देश-काल में वर्तमान दशा को प्राप्त हुए हैं। पूर्व समाज से विच्छिन्न होकर जैसे-जैसे काल अधिक होता गया, पुराने संपर्क टूटते-टूटते समाप्त होगये, तब अपनी चालू परम्पराओं को उस समाज ने अपनी विशिष्ट संस्कृति का रूप दिया। उसी पुष्टि के लिये समाज के नेताओं ने धार्मिक ग्रन्थों का निर्माण कर लिया, उसी के अनुसार समाज का संचालन प्रारम्भ होगया। उसी का परिणाम आज संस्कृति की विभिन्नरूपता है।

यद्यपि इसके विरोध में गत शताब्दी के लेखकों ने प्रचुर साहित्य का निर्माण किया है, फिर भी यह सर्वमान्य विचार रहा है, कि विश्व के साहित्य में वेद सब से प्राचीन ग्रन्थ हैं। भारतीय आर्य परम्परा में यह प्रमाणित माना जाता रहा है, कि वेद भूतल पर मानव जीवन के उन्मेष के साथ प्रकट किये गये। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सृष्टि के आदि में इसका आविर्भाव होता है, ऐसी परम्परा आर्यराष्ट्र में प्राचीन काल से चली आई है। कहने को हम सब यह कहते रहते हैं, परन्तु वास्तविकरूप में यह एक गम्भीर समस्या है, कि सृष्टि के आदि में मानव को ईश्वरीय ज्ञान वेद के रूप में कैसे प्राप्त हुआ होगा। उसके प्राप्त होने की पद्धति क्या रही होगी?

इसके साथ पहले से भी अधिक गम्भीर दूसरी यह समस्या है, कि सृष्टि के आदि में ऐसे पूर्ण मानव का संभव होना कैसे रहा होगा, जो ईश्वरीय ज्ञान को ग्रहण करने में समर्थ हो। सर्गादिकाल में ऐसे मानव के आविर्भूत होने की पद्धति स्वयं एक भारी समस्या है। पर यह एक सर्वथा भिन्न विषय है। वेदाभिर्भाव की पद्धति प्रकट करने की भावना से हम यह मानकर चलते हैं, कि उस समय सक्षम मानव की स्थिति निर्बाध थी, और वह ईश्वरीय ज्ञान को ग्रहण करने व अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ था। उस समय वेद के आविर्भाव की क्या पद्धति संभव है, यह विचारणीय है।

छात्रावस्था की घटना है। तीर्थ परीक्षा देने के लिये कलकत्ता गया था। आर्यसमाज मन्दिर में निवास था। वहां एक बंगाली सज्जन लम्बी दाढ़ी वाले हमारे अभिभावक अध्यापक महोदय से मिलने के लिये प्रायः आजाया करते थे, इस समय उनका नाम मुझे स्मरण नहीं रहा। एक दिन वार्त्तालाप में आर्य सिद्धान्त के अनुसार वेदाविर्भाव को लक्ष्य कर उपहास की भावना से बंगाली महोदय ने कहा-क्या सृष्टि के आदि में ईश्वर ने वेद की पुस्तकों को रस्सी में बांधकर आसमान से नीचे की ओर लटका दिया था? ये वेद पुस्तक ईश्वर ने छपवाये

कहां थे? या कभी आसमान से बादल की तरह बरस गये थे? इसी तरह की बात कर उन महोदय ने गहरे मजाक के साथ यह प्रकट किया था, कि ऐसी पद्धति का पता नहीं लगता, जिससे इसे संभव माना जासके।

दर्शन शास्त्र के अध्ययन के अनन्तर अनेक बार यह समस्या मस्तिष्क में उभरती रही है। और इसके समाधान की दिशा में मनन निरन्तर प्रगतिशील रहा है, लाहौर में प्राध्यापक काल की एक घटना ने इस समस्या के समाधान को समझने में मुझे अनुपम सहयोग प्रदान किया। उसी के उल्लेख द्वारा इस विषय को स्पष्ट करना कथञ्चित् सुविधा जनक होगा। वह घटना सन् 1925 ई० के आसपास की है।

उन दिनों मेरे एक सुहृद मुकेरियां निवासी प्रो० जगदीशमित्र लहौर में निवास करते थे। वे सम्मोहिनी विद्या में अत्यन्त निपुण थे। किसी भी व्यक्ति को सामने देखकर अथवा उसके अङ्ग को स्पर्शकर उसे मूर्च्छित कर सकते थे, अपनी इच्छानुसार उससे कुछ भी कहलवा सकते थे। उन दिनों उन्होंने वहां अपना एक क्लीनिक खोला हुआ था, अपनी उस विद्या के द्वारा वे मानसिक रोगियों को चिकित्सा किया करते थे। मैंने स्वयं ऐसा देखा है, वे फोन पर रोगी से बात कर उसके तात्कालिक कष्ट को दूर कर दिया करते थे। सहस्रों के जनसमूह को पांच सैकण्ड के उनके दृष्टिपात से मैंने मूर्च्छित होते देखा है। दोपहर को कालिज से वापस होते समय प्राय: कुछ देर के लिये मैं उनके पास रुक जाया करता था। अन्दर की ओर दो कमरे थे, दोनों के आगे एक लम्बा बरामदा और उसके आगे सड़क के साथ एक चबूतरा था, जिसके ऊपर टिन शैड पड़ा था। एक दिन उनके साथ अन्दर मैं आकर कमरे में बैठा ही था, कि एक सुन्दर हृष्ट पुष्ट नवयुवक घड़घड़ाता कमरे में घुस आया, और दरवाजे के पास खड़े होकर प्रोफेसर को कहने लगा-"तुम बड़े धूर्त्त, मक्कार हो, तुम धोखा देकर लोगों को ठगते हो। कल तुमने हमारे कालिज में जो प्रदर्शन किया, वे माध्यम लड़के तुम्हारे पहले ही सिखाये हुए थे।" यद्यपि यह सर्वथा असत्य था, प्रोफेसर पहले से उन लड़कों के साथ पूर्णरूप से अपरिचित था, एफ० सी० कालिज के वे लड़के थे। कालिज अधिकारियों के आमन्त्रण पर वह सम्मोहिनी विद्या का प्रदर्शन किया गया था। यह आने वाला नौजवान भी एफ० सी० कालिज का छात्र था। उसकी बकवाद को प्रोफेसर कुछ सैकण्ड सुनता रहा। मैं हैराना था, वह क्यों बके जारहा है। उसके बाद प्रोफेसर ने उसी ओर देखा, और आदेश के स्वर में कहा-तुम यहां से अब जा नहीं सकते। लड़का तैश में आकर बोला-मैं यहां हर्गिज नहीं रुकूंगा; देखूं, मुझे कौन रोकता है, प्रोफेसर ने तेजस्वी स्वर में कहा-नहीं, तुम हर्गिज नहीं जासकते, खबरदार! यह सुनते ही लड़के ने बिना कुछ कहे तेजी से दरवाजे के

बाहर बरामदे में कदम रक्खा। कदम रखना था, कि वह धड़ाम से जमीन पर गिरा और उसके मुँह से दर्दनाक चीख निकली-हाय! मेरा शूटिंग पेन। मैं उसकी चीख सुनकर बेतहाश बाहर को भागा। मैंने देखा-वह पेट को पकड़ मछली की तरह तड़प रहा था। शूटिंग पेन, मुझे बचाओ। प्रोफेसर मेरे पीछे-पीछे आया, हाथ से उसका कन्धा छूते हुए कहा-कहां दर्द है? कहीं कुछ नहीं। उसी क्षण लड़के के चेहरे पर शान्ति व सान्त्वना का मानो सागर उमड़ पड़ा हो। वह एक साथ बैठ गया। प्रोफेसर के पैरों में सिर रखकर क्षमा मांगी, और चला गया।

एक घटना का उल्लेख और करूँगा। उन्हीं दिनों मेरे एक भाई सैर करने के विचार से लाहौर पहुंचे। वहाँ के विशिष्ट दर्शनीय स्थानों को मैंने उन्हें दिखाया। तभी एक दिन हम चिड़ियाघर देखने गये। दूर से मैंने देखा, प्रो० जगदीश मित्र वहाँ घूम रहे हैं। मैंने भाई साहब से कहा, जरा लपक कर चलिये, एक अद्भुत व्यक्ति से आप का परिचय कराऊँ। हमने प्रोफेसर को जा पकड़ा। भाई साहब का परिचय करा मैंने कहा-यह कुछ देखना चाहते हैं। मेरे संकेत को समझकर प्रोफसर बोले, आईये, हम सब साथ चल कर वहाँ पहुंचे, जहाँ शेर-बघेरों के कटघरे थे। वहां बीच के कटघरे में सब से बड़ा टाईगर (धारी वाला शेर) था। शेर के कटघरों के आगे लगभग तीन फीट जगह छोड़ कर बाहर की ओर लोहे का एक रेलिंग लगा होता है, जिससे दर्शक कटघरे के लोहे के सींकचों से दूर रह कर जानवरों को देखें और खतरे से बचे रहें।

प्राफेसर रेलिंग और सींकचों के बोच की गली-सी में चले गये। शेर अन्दर को कोठरी में लेटा था, उसकी ओर देखा, और कुछ संकेत किया, शेर सहसा उठा और धीरे से बाहर वाले घेरे में आ गया। जैसे ही दरवाजे से बाहर हुआ, प्रोफेसर दरवाजे के सामने से कटघरे के एक कोने की ओर चल पड़ा शेर उसी ओर उसके साथ चल पड़ा। कोने तक पहुंच कर प्रोफेसर वापस दूसरे कोने की ओर चल दिया, शेर भी साथ-साथ उसी तरह चल पड़ा। कोने तक जाकर प्रोफेसर फिर वापस हुआ, दूसरी ओर को तेजी से लपका; शेर भी उसी गति से लपकता हुआ साथ-साथ गया। उस कोने से फिर वापस हो प्रोफेसर सर भागा, शेर भी उसी गति से उसके साथ दौड़ा। बीच में सिर्फ लोहे के सींकचे थे, अन्दर शेर था, बाहर प्रोफेसर तीन चार चक्कर दोनों ने साथ-साथ लगाये; पर उसे गति का नियन्त्रण प्रोफेसर के अधीन था। शेर उस समय एक पालतू आज्ञाकारी जानवर की तरह प्रोफेसर का अनुगामी हुआ स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

इतने कार्य में पन्द्रह-बीस सेकण्ड लगे होंगे, बाहर दर्शकों की भारी भीड़ जमा हो गई। मैंने संकेत किया, भीड़ बहुत हो गई है।

प्रोफेसर ने कटघरे के समाने बीच में खड़े हो कर शेर के बैठ जाने का हाथ से संकेत किया। उसके साथ ही शेर ऐसे बैठ गया जैसे पुराना सधा हुआ हो। प्रोफेसर ने उसकी आँखों में आँख मिलाई और अपने प्रभाव को उस पर से वापस किया, शेर एक करवट में लेट गया, और प्रोफेसर को देखता रहा, उस समय ऐसा मालूम हो रहा था, मानो शेर ने अपने आप को प्रोफेसर के चरणों में समर्पित कर दिया है। प्रोफेसर ने उस समय अपना दाहिना हाथ सींकचों के अन्दर ले जाकर शेर के सिर पर कई बार फेरा और उसे दो तीन बार थपथपाया, तब हाथ बाहर निकाल लिया। इसके बाद प्रोफेसर रेलिंग से बाहर आ गया। शेर उस समय लेटा हुआ हो सिर्फ सिर को थोड़ा उठा कर प्रोफेसर की ओर बड़ी दर्दभरी निगाह से एक टक देख रहा था। स समय उसकी आँखें बहुत पैथेटिक-करुणा से भरी हुई दिखाई दे रही थीं। मानो वह कह रहा था-दोस्त! हमें अकेला छोड़ कर कहाँ जा रहे हो, तुम्हारे इस बिछोह को हम कैसे सह सकेंगे। प्रोफेसर इस भावना को समझता था, वहाँ से वापस चल पड़ने पर दो-दो तीन-तीन सेकण्ड के अन्तर से प्रोफेसर ने तीन चार बार मुड़-मुड़ कर शेर की ओर देखा था। कदाचित् दृष्टिपात से अपने प्रभाव को समाप्त करते हुए उसे समझाया था- तुम अपने घर में खुश-ओ-खुर्रम रहो, हम अब जाते हैं।

दो मिनट बाद मैंने प्रोफेसर को कहा, जरा रुको, मैं अभी आया। वहां से हटकर मैं फिर शेर के कटघरे के सामने आया, मैंने देखा, वह करवट बदल कर जमीन पर बिल्कुल बिछा पड़ा है निश्चेष्ट। मैंने तत्काल वापस होकर उसकी इस मुद्रा के विषय में प्रोफेसर से मालूम किया। उसने शान्तभाव से कहा-अब उसे किसी प्रकार के आन्तरिक विकार होने का भय नहीं है, वह सर्वथा स्वस्थ है।

इन घटनाओं की वास्तविकता को समझने के लिये अनेक बार मनन किया, और जन-समूह में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। एक व्यक्ति-जिसने अभ्यास से अपने मनोबल व आत्मबल को प्राप्त कर लिया है अपने उस विशिष्ट सामर्थ्य से अपने विचारों को मानव से लेकर भयावह हिंस्र पशु तक के मस्तिष्क में संक्रान्त कर देता है। वह प्रभावित प्राणी उसी तरह व्यवहार करता है, जैसा संक्रान्ता चाहता है। साधारण अध्ययनाध्यापन में गुरु अपने भावों व अपने ज्ञान को शिष्यों में संक्रान्त करता है, परन्तु वहां ज्ञान के संक्रमण का माध्यम 'वाणी' होतो है, केवल आन्तरिक सामर्थ्य नहीं, उक्त घटनाओं के रूप में जा उदाहरण दिये गये हैं, वहां 'वाणी' आदि बाह्य माध्यम का नगण्य जैसा उपयोग होता है, आन्तर सामर्थ्य ही वहाँ ज्ञान-संक्रमण का प्रधान साधन है।

इस स्थिति को जब हम सर्गादिकाल में ईश्वर के द्वारा ऋषियों को वेदोपदेश के विषय में लागू करते हैं, तो यह पर्याप्त सीमा तक स्पष्ट हो जाता है, कि इस प्रकार ज्ञान-संक्रमण असंभव नहीं है। मानव हर तरह से अल्पज्ञ व अल्पशक्ति है, फिर भी ज्ञान-संक्रमण की उस प्रक्रिया पर किसी सीमा तक अमल कर लेता है। परमात्मा तो सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् है, सर्गादिकालिक ऋषियों के मस्तिष्क में वह वेद रूप ज्ञान का संक्रमण अनायास कर सकता है। जहां ज्ञान का संक्रमण किया जाता है, वे भी विशिष्ट व्यक्ति होते हैं, मानो वेद ज्ञान को प्रकट करने के लिए माध्यम रूप में उनका प्रादुर्भाव होता है। संभवत: इसीलिये अनन्तरवर्त्ती ऋषियों ने शास्त्रों में ऐसा उल्लेख किया है, कि जिन पर वेद-ज्ञान संक्रान्त होता है, वे सब आदि-ऋषि ब्रह्मा को वेद पढ़ा देते हैं। उनका कार्य पूरा हो जाता है। उनके अन्य किसी उपयोग का कोई उल्लेख शास्त्र में उपलब्ध नहीं होता।

उन ऋषियों के मस्तिष्क में अर्थ ज्ञान पूर्वक वेद का संक्रमण होता है। जो सर्वशक्ति सम्पन्न परमात्मा अपने असीम सामर्थ्य व व्यवस्थाओं के अनुसार अनन्त विश्व का निर्माण करता है, उसके लिये आदि-मानव मस्तिष्क में सार्थ वेद का संक्रमण एक अत्यल्प जैसा कार्य है। वेद के आविर्भाव की ऐसी पद्धति समझी जा सकती है। ये वेद ही हमारी संस्कृति के मूल आधार हैं, यह समझ कर हमें इस दिशा में पूर्ण प्रयास करते रहना चाहिये।

एक बात अन्त में लिख दूँ, प्रो० जगदीश मित्र के ऐसे पचासों प्रदर्शन उनके साथ रह कर मैंने स्वयं देखे हैं। वे आज नहीं, पर मेरे समान अभी अनेक व्यक्ति जीवित हैं, जो उनके प्रदर्शन और उनके ऐसे सामर्थ्य के विषय में जानकारी रखते हैं।

उससे कुछ वर्ष बाद एक महात्मा अपने साथ शेर लेकर लाहौर आया। वह उन दिनों भारत के अनेक नगरों में भ्रमण करता रहा था। शेर के गले में रस्सी डल कर वह उसे अपने साथ खुला रखता था। वह लाहौर में धनीराम भल्ला की कोठी पर ठहरा था, मोटर में कुत्ते की तरह शेर को बैठा कर इधर-उधर जाता रहता था। एक दिन उसे ला० खुशहालचन्द [वर्त्तमान-आनन्द स्वामी] ने अपने स्थान पर आमन्त्रित किया। लाला जी उन दिनों अनारकली-आर्यसमाज के बाहर के भाग में बने मकानों को दूसरी मंजिल पर रहते थे। वह साधु उसी जीने से शेर को लेकर ऊपर गये। वह एक कमरे में बिछे तख्त के ऊपर महात्मा जी के साथ बैठा था, उसी कमरे में लगभग चालीस-पचास स्त्री-पुरुष नीचे बिछे फर्श पर बैठे थे, कोई व्यवधान शेर और व्यक्तियों के बीच में नही था। मैं भी उन व्यक्तियों में एक था। मेरा विश्वास है, यौगिक अभ्यास से मानव अपनी सुप्त विविध शक्तियों को जागृत कर सकता है, और उसके अनुसार ऐसे कार्य कर देता है, जो साधारण जन को चमत्कार मालूम होते हैं, पर उसके लिये वह बात सामान्य होती है।

# एक अनुकरणीय जीवन परिचय

आज हम आपके सामने एक ऐसे व्यक्ति के विषय में जानकारी देते हैं, जिसने गृहस्थी व्यतीत करते हुए, अनेक समाज-सुधार के कार्य किए। ऐसे सत्य-धर्म की राहों पर चलने वाले, ईमानदारी की प्रतिमूर्ति, समाजसुधारक श्रीओम् धनखड़ का जन्म 1972 में हरियाणा प्रांत के गाँव गोयला, जिला झज्जर के एक पौराणिक परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्रीरामपत धनखड़ तथा माता का नाम श्रीमती किताबकौर है। इनके माता-पिता अशिक्षित हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। इनमें धार्मिक भावनाएँ हिलोरें लेने लगी। बचपन में ही हनुमान् चालीसा कण्ठस्थ कर ली थी। इनके माता-पिता ने इनको भारत-केसरी सुरेश पहलवान के अखाड़े में भेज दिया। कुछ वर्षों तक इन्होंने कुश्ती का अभ्यास किया तथा ये अपने क्षेत्र के श्रेष्ठ पहलवान बन गए।

समय बीतता गया। इनकी शादी भी एक पौराणिक परिवार में कर दी गई। शादी के बाद इन्होंने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सन् 2001 में C.P.E.D का अध्ययन किया। इसके बाद अपनी शिक्षा को त्याग कर समाज-सुधार के कार्यों में लग गए। सर्वप्रथम अपने गाँव-गोयला कलां में सन् 2002 में आर्यसमाज की स्थापना की। प्रत्येक रविवार को वहाँ यज्ञ-सत्संग होता है। लोगों के कल्याण के लिए समय-समय पर गाँव में विद्वानों, भजनोपदेशकों को भी लेकर आते। गाँव की प्रत्येक चौपाल में वेद-पारायण यज्ञ भी करवाया। ये गाँव के ही नहीं अन्य लोगों को भी सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते रहे। गाँव में भी अखाड़ा खोला लेकिन गाँव की राजनीति के कारण कुछ समय बाद ही बंद कर दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी के स्वर्गोपरान्त उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य बलदेव जी को लाया गया। फिर आचार्य बलदेव जी ने डा० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की जन्म-स्थली गाँव बरहाणा में गऊ-पालन की प्रतिज्ञा कराई। तब घर आते ही भैंस बेच दी और तब से लेकर आज तक घर में गऊ ही रखते आए हैं।

इसके बाद ये स्वामी यज्ञमुनि के गुरुकुल चित्तौड़ा झाल में संरक्षक रहे। तत्पश्चात् ये स्वामी रामदेव जी के सान्निध्य में रहे। इन्होंने योग-शिक्षा ग्रहण की तथा वहाँ से योग-शिक्षक बनकर निकले। फिर गाँव-गाँव में जाकर योग-शिविर नियुक्त किए। इनके बच्चे आसन, प्राणायाम करते, ये उनके महत्त्व को समझाते रहते।

इसी दौरान आर्य निर्मात्री सभा की स्थापना हुई। इन्होंने अनेक निर्मात्री शिविरों में भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त इन्होंने अनेक आध्यात्मिक तथा योग शिविरों में भाग लिया। गाँव के अनेक युवाओं तथा बुजुर्गों को भी अपनी बाइक पर शिविरों में ले जाते थे। सैंकड़ों युवाओं को शिविरार्थी बनाया। 15 नौजवानों को कमांडो ट्रेनिंग दी।

इसके पश्चात् इन्होंने स्वामी रामदेव द्वारा किए गए आंदोलनों में भी भाग लिया। 4 जून 2012 को दिल्ली के रामलीला मैदान में हुए

आंदोलन में अनेक लाठियाँ खाई। सन् 2013 में गुरुकुल झज्जर में संरक्षक का कार्य किया। तत्पश्चरात् दयानन्द मठ रोहतक में भी आंदोलन हुआ। वहाँ भी अपनी जान पर खेलकर दयानन्द मठ रोहतक को कब्जाधारियों से मुक्त कराने में बढ़-चढ़कर भाग लिया। रामपाल जैसे ढोंगी लोगों के विरुद्ध आंदोलन किए। वहाँ भी अपनी जिंदगी दाँव पर लगा दी।

इनमें मानव के प्रति ही नहीं पशुओं के प्रति भी सेवा-भावना भरी हुई है। इन्होंने गऊ-माता की सेवा के लिए गोरक्षा-आंदोलनों में भी भाग लिया। दिन में ही नहीं रात में भी यदि किसी का फोन आ जाता कि वे हत्यारे, कसाई गऊओं तथा बैलों को लेकर जा रहे हैं। ये उसी समय अपनी नींद छोड़कर उस स्थान पर पहुँच जाते और उन गऊओं तथा बैलों को छुड़ाकर उन हत्यारों को प्रशासन (पुलिस) के हवाले कर देते।

11 दिसंबर 2016 को आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव हुए। लेकिन इन चुनावों से पहले इन्होंने भरपूर प्रयास किया कि ये चुनाव नहीं होने चाहिएं। ये चार-पाँच गाँवों से व्यक्तियों को इकट्ठा करके पंचायत लेकर गए। ये चाहते थे कि सर्वसहमति से आचार्य विजयपाल को ही नियुक्त कर लिया जाए। लेकिन असफल रहे। फिर ये 2016 के चुनावों में विजयी रहे। इन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य के पद पर नियुक्त किया गया। लेकिन महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, स्वामी ओमानन्द, आचार्य बलदेव जी की योजनानुसार कार्य न होता हुआ देख इन्होंने अपने पद से मात्र नौ महीने में ही स्वेच्छा से त्याग-पत्र दे दिया।

अब जरा इनके घर के परिवेश पर भी दृष्टि डालकर देख। इनके घर में प्रतिदिन दोनों समय संध्या होती है। संध्या के बिना कोई भी भोजन नहीं करता। पाक्षिक, त्यौहारों पर, बच्चों के जन्म-दिवस पर घर में यज्ञ करते हैं। इन्होंने अपने बच्चों के महर्षि दयानन्द द्वारा रचित संस्कारविधि पुस्तक के अनुसार क्रमशः अब तक सारे संस्कार किए हैं। उनके नाम भी विधि-विधानानुसार रखे। लड़कियों के विषम आकारान्त (रविता, सुमेधा) तथा लड़के का सम अकारान्त (मनुदेव)। अपने बच्चों को गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा से शिक्षित किया। अपनी बड़ी बेटी को गुरुकुल चोटीपुरा में शिक्षित कराया। अपने बच्चों, अपनी पत्नी तथा अपने माता-पिता को भी शिविरों में भाग दिलवाया। इनके लड़के ने आर्यवीर दल के अनेक शिविरों में भाग लिया तथा प्रत्येक शिविर में प्रथम रहा।

अब जरा देखिये कि समाज में जब ऐसे व्यक्ति विद्यमान हैं जिसने गृहस्थी जीवन के साथ समाज के देश के हित के लिए अपनी जान पर खेलकर ऐसे-ऐसे कार्य किए। इनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी अपने समाज, अपने देश के हित के लिए इनका पूर्ण ईमानदारी के साथ सहयोग करें। जब सब ऐसा करेंगे तो हमारा देश शीघ्र ही उन्नति को प्राप्त होगा और विश्वगुरु कहलाएगा।

**प्रस्तुतकर्त्ता**
**संजय आर्य**
**गोयला कलाँ (झज्जर)**
**सम्पर्क सूत्रः 99921016024**

# गुरुकुल झज्जर का 102 वां उत्सव सम्पन्न

आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का 102 वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 17-18 फरवरी दिन शनिवार रविवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर अनेक संन्यासी, विद्वान् तथा राजनेता पधारे थे जिन्होंने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए, जो निम्नलिखित हैं।

इस कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जगदेव जी विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के यजमान श्री राजेन्द्र शास्त्री जी फरमाणा रहे, स्वामी देवव्रत जी ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन दिया तथा शारीरिक आत्मिक रूप से सबल रहने की प्रेरणा दी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री जगदेव जी ने परोपकार करने तथा यज्ञिय जीवन जीने की प्रेरणा दी, गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी ने अनुशासित जीवन जीने के विषय में उपदेश दिया। कार्यक्रम में पधारे आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेशदत्त जी दिल्ली तथा श्री तेजवीर जी आर्य ने अपने भजनों के माध्यम से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की संचालन व्यवस्था गुरुकुल झज्जर के मन्त्री श्री राजवीर जी छिकारा ने बड़े ही सुचारू ढंग से निभाई। कार्यक्रम में पधारे विद्वान् उपदेशक राजेन्द्र जी कालवा, डॉ० महावीर जी मीमांसक दिल्ली, डॉ० जयभारती पंचकूला, ब्र० जयकुमार आचार्य गुरुकुल मंझावली, डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी रोहतक, डॉ० आचार्य बलवीर जी रोहतक, श्री सत्यवीर जी शास्त्री (पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), डॉ० ओमकुमार जी जीन्द, डॉ० चन्द्रकेतु जी आयुष विभाग दिल्ली, स्वामी ब्रह्मानंद जी मुजफ्फर नगर उ०प्र०, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मन्त्री आ०प्र० सभा उत्तर प्रदेश, स्वामी देवव्रत जी प्रधान आर्यवीर दल, स्वामी ब्रह्मानन्द जी (महेन्द्रगढ़), आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरदेव आर्य आदि विद्वानों ने अपने जीवनोपयोगी उपदेशों तथा भजनों के माध्यम से कार्यक्रम में आये हुए आर्य जनसमुदाय को गद्गद कर दिया। इसी बीच गुरुकुल झज्जर के व्याकरणाचार्य आचार्य शतक्रतु जी के दोनों बच्चे ध्रुवदेव आर्य तथा बेटी नन्दिनी आर्या ने अपने भजनों से सभी का मन मोह लिया। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने अपने व्याख्यान तथा भजन प्रस्तुत किए। 17 फरवरी सायं 4 बजे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा डॉ० स्वामी देवव्रत जी तथा गुरुकुल झज्जर के मुख्याध्यापक स्वामी शुद्धबोध जी के मार्गदर्शन में विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया गया जिसमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखम्ब, लाठी, भाला, तलवार, धनुष-बाण, लोहे के

सरिये को गले से मोड़ना, बेल तोड़ना, एवं जीप रोकना आदि कार्यक्रम किये गये।

इस कार्यक्रम में पधारे श्री सुमेधानन्द जी सांसद सीकर राजस्थान ने गुरुकुल को तन मन धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया। गुरुकुल झज्जर के कुलपति श्री डॉ० योगानन्द शास्त्री पूर्व स्पीकर दिल्ली सरकार तथा गुरुकुल झज्जर के प्रधान चौ० पूर्णसिंह जी देशवाल ने भी हर सम्भव सहयोग करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में 18 फरवरी को पधारे हरियाणा के कृषि मंत्री श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी ने अपने उद्बोधन में जीवन को उन्नत करने की प्रेरणा दी तथा अपने ऐच्छिक कोष से 11 लाख रुपये की आर्थिक मदद करने की घोषणा की तथा गुरुकुल में अपने स्व० दादा जी की स्मृति में कमरा बनवाने के लिए अपने पिता जी की ओर से एक लाख इक्यावन हजार रुपये देने की घोषणा की। इसी कड़ी में श्री विपुल गोयल जी उद्योग मंत्री हरयाणा सरकार ने अपने प्रतिनिधि के तौर पर श्री डॉ० चन्द्रकेतु जी के द्वारा 11 लाख रुपये देने की घोषणा करवाई। इस कार्यक्रम में आए हुए अपार जनसमूह ने भी दिल खोलकर दान दिया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल झज्जर की ओर से स्वामी ओमानंद सरस्वती स्मृति सम्मान समारोह किया गया। जिसमें वैदिक विद्वान् तथा लेखक, डॉ० महावीर जी मीमांसक दिल्ली को, नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य जय कुमार गुरुकुल मंझावली, भारत वर्ष के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव आर्य आदि को 15000 रुपये नगद शाल गुरुकुल का साहित्य, स्मृति चिह्न तथा गुरुकुल की फार्मेसी से निर्मित ओषधियों के द्वारा तीनों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी ने सभी विद्वानों को विधिवत् दक्षिणा आदि से सम्मानित किया तथा सभी आये हुए अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद किया और सभी दानदाताओं से आगे भी सहयोग करते रहने की अपील की।

उत्सव में पधारने वाले अतिथियों के भोजन और आवास का प्रबन्ध श्री कृष्ण कुमार शास्त्री, श्री अशोक कुमार शास्त्री, श्री महावीर शास्त्री तथा श्री अरविन्द शास्त्री ने कुशलतापूर्वक किया।

इस अवसर पर हजारों व्यक्तियों ने पुरातत्त्व संग्रहालय देखकर अपने ज्ञान में वृद्धि की। संग्रहालय में श्री विरजानन्द दैवकरणि ने सभी द्रष्टाओं को संग्रहालय दिखाया तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

इस प्रकार गुरुकुल झज्जर का यह 102 वां वार्षिक महोत्सव ईश कृपा से दानदाताओं के सहयोग तथा उपदेशक महानुभावों के आशीर्वाद से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

## भूत-प्रेत आदि का स्वरूप

जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतक शरीर जिसका नाम प्रेत है उसका दाह करने हारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक को उठाने वालों के साथ दशवें दिन शुद्ध होता है। और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हो, वर्तमान में आ के न रहे वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं। अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थविद्या के पढने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। (सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास)

तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि। (सांख्यदर्शन 1/26), तन्मात्राओं (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द) से स्थूल भूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) की उत्पत्ति होती है।

पंचभौतिको देहः (सांख्य दर्शन 3/18), यह शरीर ''पंच भूतों'' पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है।

घ्राण रसन चक्षुस्त्वक् श्रोत्राणीन्द्रियाणि भूतेभ्यः। (न्यायदर्शन 1/1/12), नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा और कान ये पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच महाभूतों अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से उत्पन्न हुई हैं।

पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशमिति भूतानि (न्यायदर्शन 1/1/13) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पांच ''भूत'' कहे जाते हैं और ये ही इन्द्रियों के कारण हैं।

जो आप से आप ही है, किसी से कभी उत्पन्न नहीं हुआ है, इससे उस परमात्मा का नाम ''स्वयम्भू'' है। (सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लास)

पुनरुत्पत्तिः प्रेत्यभावः। (न्यायदर्शन 1/1/19), मरे हुए शरीर को ''प्रेत'' कहा जाता है तथा मरने के पश्चात् पुनः जन्म को ''प्रेत्यभाव'' कहते हैं?

''रक्षः रक्षितव्यमस्माद्, रहसि क्षणेतीति वा, रात्रौ नक्षते इति वा'' (निरुक्त 4/18) जिससे धन-सम्पत्ति, प्राण आदि की रक्षा करनी पड़े, जो एकान्त अवसर पाकर हानि पहुचाता है और रात्रि में लूट, चोरी-व्यभिचार आदि दुष्ट कर्मो में लगे रहते हैं, वे राक्षस हैं। अर्थात् अपने स्वार्थ के लिए-दूसरों की हानि करने वाले, दूसरों को सताने और पीडित करने वाले, अत्याचारी, अन्यायकारी, बलातकारी, स्वभाव के और मांस-मदिरा का सेवन करने वाले व्यक्ति 'राक्षस कहलाते हैं। पे पिशितम्=अवयवीभूतं, पेशितं वा मांसं रुधिरादिकम् आचमन्ति भक्षयन्ति ते पैशाचाः। प्राणियों का कच्चा मांस खाने वाले, रक्त पीने

वाले, हिंसक, दुराचारी, अनाचारी, मलिन संस्कारों वाले अत्यन्त निम्न और घृणित स्वभाव के व्यक्ति ''पिशाच'' कहलाते हैं।

'देव' विद्वानों को और अविद्वानों को 'असुर' पापियों को 'राक्षस' अनाचारियों को 'पिशाच' मानता हूँ। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

'दसु-उपक्षये' धातु से 'यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच्' (उणादि 3/20) से युच् प्रत्यय के योग से 'दस्यु' शब्द बनता है। ''दस्यु दस्यतेः क्षयार्थात्... उपदासयति कर्माणि'' दस्यु वह है जिसमें शुभकर्मों का अभाव है या शुभ कर्मों में बाधा डालते हैं।

मुखराहूरूपजानां या लोके जातयो बहिः।
म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः।।
(मनु० 10/45)

लोक में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों से श्रेष्ठ कर्त्तव्यपालन न करने के कारण बहिष्कृत वा इनमें अदीक्षित जो जातियाँ हं, चाहे वे म्लेच्छभाषाएं बोलती हैं या आर्यभाषाएं वे सब दस्यु कहलाती हैं। ''असुरताः स्थानेष्वस्ता, स्थानभ्य इति वा, असुरिति प्राणानामास्तः शरीरे भवति, तेन तद्वन्तः।'' (निरुक्त 318) जो अपने देह और प्राणों के ही पोषण से अपने ही स्वार्थ, सुख-सुविधा, धन और हित साधन में तत्पर रहते है, उसकी पूर्ति के लिए तरह-तरह के छल-प्रपंच आदि रचते हं, ऐसे व्यक्ति असुर कहलाते है।

गन्धर्व की व्युत्पति है ''ग्राम्=वाचम् धरतीति गन्धर्वः'' अर्थात् गाने की उत्तम वाणी को धारण करने वाला। संगीत अर्थात् गाने, बजाने, नाचने की कला में प्रवीण लोगां को, जो विलासी, आमोद-प्रमोद में व्यस्त शृङ्गारप्रिय और कामुक प्रवृत्ति-प्रधान हं 'गन्धर्व' कहलाते है।

शूद्र=शोचनीयः शोच्यां स्थितिमापन्नो वा, सेवायां साधुरविद्यादिगुणसहितो मनुष्यो वा। शूद्र वह व्यक्ति होता है जो अपने अज्ञान के कारण किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर पाया और जिसे अपनी निम्न स्थिति होने की तथा उसे उन्नत करने की सदैव चिन्ता बनी रहती है। जो केवल सेवा आदि कार्य ही कर सकता है, ऐसा मनुष्य शूद्र होता है।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभु कर्म समदिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रुषामनसूयया।।
(मनु०/1/91)

परमेश्वर ने जो विद्याहीन अर्थात् जिसको पढने से विद्या न आ सके, शरीर से पुष्ट-सेवा में कुशल हो, उस शूद्र के लिए इन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनो वर्णों की निन्दा से रहित प्रीति से सेवा करना यही एक कर्म करने की आज्ञा दी है। 'म्लेच्छ अव्यक्तभाषी' अर्थवान् धातु से 'घञ्' प्रत्यय के योग से म्लेच्छ शब्द बनता

है। जिसका भाव है-'ऐसे अशिक्षित लोग जो अस्पष्ट-अशुद्ध भाषा बोलते हैं।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।
मनु० (2/20)

इसी आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, दस्यु, म्लेच्छ आदि सब अपने-अपने योग्य विद्या चरित्रा की शिक्षा और विद्या-पास करें। (सत्यार्थ प्रकाश समु० 11)

आर्यवाचो म्लेच्छवाच: सर्वे ते दस्यव: स्मृता:।।
मनु० (मनु० (10/45)

म्लेच्छदेशस्त्वत: पर:।। मनु० (2/23)

जो आर्यावर्त देश से भिन्न देश हैं वे दस्युदेश और म्लेच्छ देश कहाते हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है कि आर्यावर्त्त से भिन्न पूर्व देश से लेकर ईशान, वायव्य और पश्चिम देशों में रहने वालो का नाम दस्यु और म्लेच्छ तथा असुर है और नैर्ऋत, दक्षिण तथा आग्नेय दिशाओं में आर्यावर्त्त देश से भिन्न रहने वाले मनुष्यों का नाम राक्षस है।

(सत्यार्थ प्रकाश अष्टमसमुल्लास)

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो वर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्। उत शूद्रे उतार्ये।। (ऋ० 1/51/8), अथर्व० 19/62/1) आर्य नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाडी है।

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम्।
आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभि: स्वैर्विभावयेत्।।
(मनु० 10/58)

वर्णों की दीक्षा से रहित अथवा वर्णों से बहिष्कृत, श्रेष्ठ रहन सहन और स्वभाव का दिखावा करने वाले किन्तु वास्तव में श्रेष्ठ लक्षणों से रहित अनार्य, दुष्ट संस्कारों वाले व्यक्ति से उत्पन्न दुष्ट संस्कारी या दुष्ट प्रवृत्ति वाले, उसके अपने कर्मों से पहचान ले अर्थात् जो श्रेष्ठ कर्मों को न करता हो और अश्रेष्ठ कर्मों को करता हो, वह अनार्य है।

अनार्य अर्थात् जो अनाडी, आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक् डाकू, चोर हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य है, वह दस्यु कहाता है। (आर्योद्देश्यरत्नमाला)

अद्भिर्गात्राणि शध्यन्ति मन: सत्येणी शुध्यति।
विद्यातपोम्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।
(मनु० 5/109)

जल से शरीर के बाहर के अवयव, सत्याचरण से मन, विद्या और तप अर्थात् सब प्रकार के कष्ट भी सह के धर्म ही के अनुष्ठान करने से जीवात्मा, ज्ञान अर्थात् पृथिवी से ले के परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होती है।

**श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा**
**ग्राम एवं पत्रालय घटायन**
**जनपद मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)**

## ''अन्तिम संस्कार और पर्यावरण'' विषयक लेख

# ऐसी भी हैं वैदिक सिद्धान्तसिक्त सन्तानें

लेखक-प्रियवीर हेमाइना

सुप्रसिद्ध कर्मयोगी समाजसुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने निर्वाण से पूर्व ही जो वसीयतनामा लिखकर अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा को दिया था उसमें उन्होंने जहाँ अन्य बातें लिखी थी वहाँ अपने अन्त्येष्टि संस्कार के बारे में भी स्पष्ट यह लिखा था-

''जैसे इस सभा को मेरी और मेरे सब पदार्थों की यथाशक्ति रक्षा और उन्नति करने का अधिकार है, वैसे ही उसे मेरे मृतक शरीर के संस्कार का भी है। वह न तो गाड़ा जाय, न जल-प्रवाह किया जाय और न जंगल में फेंका ही जाय। 'संस्कारविधि' में वर्णित वेद विहित विधि से वेदी बनाकर वेदमंत्रों से शव को भस्म किया जाय! वेद-विरुद्ध कुछ भी न किया जाय। भस्म खेत में डाल दी जाय।''

महर्षि जी की उक्त इसी अभिलाषा के अनुरूप ही उनका अन्त्येष्टि संस्कार उनके भक्तों द्वारा किया गया था और उनके अस्थि-अवशेषों को अजमेर स्थित शाहरपुरा के बाग की भूमि (खेत) में ही मृत्तिकासात् किया गया था।

ऊपर के इस उद्धरण को देने का अभिप्राय यह ही है कि जैसी विधि अपने अन्त्येष्टि संस्कार के विषय में आचार्यप्रवर श्री महर्षि दयानन्द जी महाराज ने लिखी थी, वैसी ही वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करना पूर्णतः सर्वश्रेष्ठ है। इसी विधि को व्यवहार-क्षेत्र में उतारना आज के समय में आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक है क्योंकि यही विधि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक बनेगी, ऐसी मेरी धारणा है। पर्यावरण को शुद्ध-स्वच्छ रखना हम सब ही का सामाजिक दायित्व है। पर्यावरण बचेगा तो हमारा अस्तित्व बचेगा, अन्यथा हमारा और हमारी आनेवाली पीढ़ी का विनाश निश्चित है। निकट भविष्य में पर्यावरण प्रदूषण के भयंकर परिणाम होंगे ही। पर्यावारण को शुद्ध तथा स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ एवं बलिष्ठ नागरिक सुखी, शान्त था आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ऐसा नहीं कि महर्षि जी द्वारा बताई गई विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करनेवाले आज नहीं हैं, हैं और अवश्य हैं, जिसका केवल एक ही उदाहरण देना पर्याप्त समझूंगा जिसकी जानकारी मुझे अर्थात् इन पंक्तियों के लेखक को है। अभी पीछे उत्तर प्रदेश राज्य के अन्तर्गत बागपत जनपद के उसी ऐतिहासिक स्थान ''वारणावत'' (बरनावा), जहाँ पाण्डवों को जलाने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था, के पास फजलपुर सुन्दर नगर नामा गाँव में संस्थापित आर्यसमाज के मंत्री श्री विनोदकुमार आर्य के पूज्य पिता श्री आशाराम जी का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्णतः वेद विहित विधि से ही आर्य सन्तानों ने 18 नवम्बर 2016 को खेत में किया।

दाहकर्म के तीसरे दिन 20 नवम्बर को आर्य पुरुषों ने खेत में जाकर, चिता से अस्थिसंचय कर, उसी खेत में अस्थि अवशेषों को गड्ढे में डालकर पार्थिव अंशों में तो विलीन किया ही वहीं श्रद्धापूर्वक एक पौधा भी आरोपित कर दिया जिससे जगत् का वातावरण शुद्ध होता रहे! भस्म भी खेत में ही बिखेर दी गई।

धन्य हैं ऐसी वैदिक सिद्धान्तसिक्त सन्तानें जो अपने सर्वश्रेष्ठ वैदिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं को व्यवहार-क्षेत्र में निष्ठापूर्वक उतार रही हैं और पर्यावरण के संरक्षण के सम्बन्ध में प्रेरणा की स्रोत भी बन रही हैं सो भी एक अच्छे पिता से मिले अच्छे संस्कारों के कारण से ही। किम् बहुना? अगर संस्कार-पद्धति के रहस्य को समझकर हर माता-पिता कर ले कि वे सन्तान में ऐसे ही संस्कारों का आधान करेंगे जिससे वे उनसे भी उत्कृष्ट कोटि के हों, तो हर बीस-पच्चीस साल के बाद एक नई ही सुसंस्कृत पीढ़ी का, एक नये ही सुसंस्कृत युग का आगमन होगा ही। जैसी सन्तानें होंगी वैसा युग होगा ही। माता-पिता तथा समाज के मस्तिष्क को बदलकर ही हिटलर ने बीस बरस मात्र में ही एक अद्भुत सुसंस्कारी युवा-पीढ़ी का निर्माण कर दिया था। यह नई पीढ़ी उन ही विचारों, संस्कारों का मूर्त-रूप थी जो जर्मनी के एक कोने से दूसरे कोने तक एक लहर की तरह ही बहने लगी थी।

काश! कहीं इस अपने आर्यावर्त्त देश में भी कश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐसी ही सुसंस्कारी अद्भुत सन्तानें दिखाई पड़ें और इसका जगद्गुरुत्व पुनः अपने वास्तविक और पुरातन स्वरूप में आ जाये। और वैदिक आर्य संस्कृति सभ्यता अपने पुरातन गौरवमय स्वरूप को धारण कर विश्व का पथप्रदर्शन कर सके। ईश्वर हमारे राष्ट्रनायकों को इस सम्बन्ध में सुमति प्रदान करे-समीचीन वैसी ही जैसी कभी हिटलर महान् को प्रदान की थी।

**प्रियवीर हेमाइना**
**318, विपिन गार्डन**
**नई दिल्ली-110059**
**मो:- 7503070674**

# एक ग्राम का आदर्श निर्णय

जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा) के ग्राम भगड्याणा की पंचायत और प्रबुद्ध सज्जनों ने सर्वसम्मति से सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाने हेतु निम्नलिखित निर्णय लिये हैं-

1. इस ग्राम में डी०जे० बजाना निषिद्ध है। उल्लंघन करने पर एक लाख रुपया जुर्माना होगा।

2. कन्या के विवाह के समय कन्यादान देकर कन्या पक्ष के घर पर कोई व्यक्ति भोजन नहीं करेगा। बारातियों से पहले ग्रामवासी भोजन कर लेते हैं, इसलिये बरातियों के लिए भोजन कम पड़ जाता था।

3. ग्राम में निमन्त्रण पत्र (कार्ड) बांटने पर प्रतिबन्ध होगा। सूचना देने हेतु परिवार का व्यक्ति अथवा नाई पीले चावल देकर आयेगा।

4. किसी की मृत्यु के उपरान्त कोई व्यक्ति मृतकभोज अथवा काज नहीं करेगा।

5. यदि ग्राम से बाहर भी सूचनार्थ कार्ड सिस्टम खत्म करके मोबाइल से कार्य चलाया जाये तो धन और समय का दुरुपयोग नहीं होगा।

यदि इसी प्रकार का प्रबन्ध अन्य ग्रामों में भी प्रारम्भ कर दिया जाये तो धन का अपव्यय होना बन्द हो जायेगा।

**-सरपंच**
**ग्राम पंचायत भगड्याणा**
**(महेन्द्रगढ)**

# 'सुधारक' के स्वामित्व आदि का विवरण
## फार्म-4 (देखो नियम 8)

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | – | गुरुकुल झज्जर (झज्जर) |
| 2. | प्रकाशन अवधि क्रम | – | प्रतिमास |
| 3. | मुद्रक का नाम | – | वेदव्रत शास्त्री |
| | राष्ट्रीयता | – | भारतीय |
| | पता | – | आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक |
| 4. | प्रकाशक का नाम | – | आचार्य विजयपाल |
| | राष्ट्रीयता | – | भारतीय |
| | पता | – | महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (झज्जर) |
| 5. | प्रधान सम्पादक का नाम | – | आचार्य विजयपाल, |
| 6. | सम्पादक का नाम | – | विरजानन्द दैवकरणि |
| | राष्ट्रीयता | – | दोनों भारतीय |
| | पता | – | महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (झज्जर) |
| 7. | उन शेयर होल्डरों के नाम और पते जिनके पास कूल पूंजी के लिए एक प्रतिशत से अधिक शेयर हैं। | – | प्रकाशन आदि का सम्पूर्ण व्यय गुरुकुल झज्जर करता है अन्य कोई हिस्सेदार नहीं। |

मैं आचार्य विजयपाल घोषित करता हूँ कि ऊपर दिया हुआ विवरण सत्य है।

–प्रकाशक के हस्ताक्षर
**आचार्य विजयपाल**

# गुरुकुल में प्रवेश सूचना

छात्रों के अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर में नये विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। छात्र कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण और अविवाहित होना चाहिये।

1 और 15 अप्रैल 2018 ई० (प्रथम, तृतीय रविवार)

6 और 20 मई 2018 ई० (प्रथम, तृतीय रविवार)

3 और 17 जून 2018 ई० (प्रथम, तृतीय रविवार)

प्रवेश शुल्क 2000 रुपये केवल एक बार।

भोजन शुल्क 18000 रुपये प्रतिवर्ष। यह शुल्क प्रति छः मास में 9000 रुपये/9000 रुपये के रूप में भी दिया जा सकता है। शेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

**सम्पर्क सूत्र- 9416055044 ( आचार्य )**
**9416661019 ( कार्यालय )**

# दुःखद समाचार

मेजर रतनसिंह यादव के ज्येष्ठ पुत्र श्री डॉ० अरुण का निधन हृदयाघात से 14 फरवरी 2018 को रात्रि में उनके आवास ग्राम जखाला में होगया। वे 52 वर्ष के थे। अभी गत 5 फरवरी 2018 को उन्होंने अपने पुत्र सौरभ का विवाह सम्पन्न कराया था। डॉ० अरुण विरजानन्द दैवकरणि के भतीजे थे। उनकी अन्त्येष्टि क्रिया स्वामी शुद्धबोध जी ने गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों सहित 15 फरवरी 2018 को करवाई। अन्त्येष्टि के पश्चात् दिवंगत आत्मा की सद्गति और शान्ति की प्रार्थना के साथ शोक सन्तप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई। डॉ० अरुण भारतीय जनता पार्टी के रेवाड़ी क्षेत्र के विशेष अधिकारी थे। इनकी अन्त्येष्टि पर सैंकडों परिचित उपस्थित थे।

डॉ० अरुण जी अपने पीछे पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू तथा कुमारी पुत्री श्वेता को छोड़ गये है। इनके दो छोटे भाई वरुण मित्र, रंजनकुमार तथा चचेरे तायरे भाइयों ने दिवगंत परिवार का पालनपोषण करने का उत्तरदायित्व लेकर उनके पिता मेजर रतनसिंह जी को धैर्य प्रदान किया और सदा उनके सहयोग और सेवा के लिए तत्पर रहने का वचन दिया। डॉ० अरुण की माता दुर्गा देवी और धर्मपत्नी किरण की हृदयविदारक वेदना को मेजर साहब ने बड़े धैर्य से सहन किया और अतुल धैर्य का परिचय दिया।

22 फरवरी को स्वामी प्रणवानन्द जी के निर्देशन में डॉ० अरुण की स्मृति में शान्तियज्ञ किया गया। इस समय सैंकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। स्वामी जी के शरीर की अनित्यता और जीवात्मा की अमरता को लक्ष्म में रखकर अत्यन्त सारगर्मित उपदेश दिया, जिससे परिवार का शोक कुछ कम हुआ। मेजर रतनसिंह जी को धैर्य से काम लेने का परामर्श दिया, कि आप तो सैनिक रहे हैं, आपने मृत्यु को सदा निकट खड़े देखा है, अतः परिवार को देखते हुए आप अपने कष्ट को छुपायें और परिवार को धैर्य धारण करादें। इस प्रकार यह शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ० योगानन्द शास्त्री दिल्ली से तथा हरियाणा सरकार के मन्त्री प्रो० रामविलास शर्मा और कैप्टन अभिमन्यु जी ने भी आकर परिवार को सान्त्वना देकर धैर्य प्रदान किया।

-सुधारक परिवार की ओर से

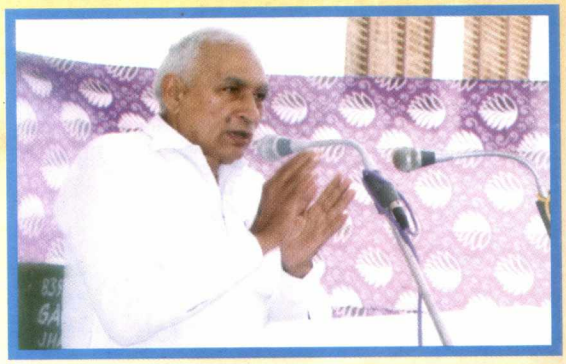

गुरुकुल के मंत्री श्री राजवीर जी
मंच का संचालन करते हुए।

डॉ. महावीर मीमांसक को विद्वत्पुरस्कार से
सम्मानित करते हुए।

आचार्य जयकुमार मंझावली को
नैष्ठिक ब्रह्मचारी सम्मान से
सम्मानित करते हुए।

पं. नरदेवजी (भरतपुर) को
आर्य भजनोपदेशक सम्मान से
सम्मानित करते हुए।

स्वाती ब्रह्मानन्द जी को सम्मानित करते
हुए चौ. पूर्णसिंह, आचार्य विजयपाल
एवं स्वाती धर्मेश्वरानन्द जी

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी को सम्मानित
करते चौ. पूर्णसिंह, आचार्य विजयपाल
एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

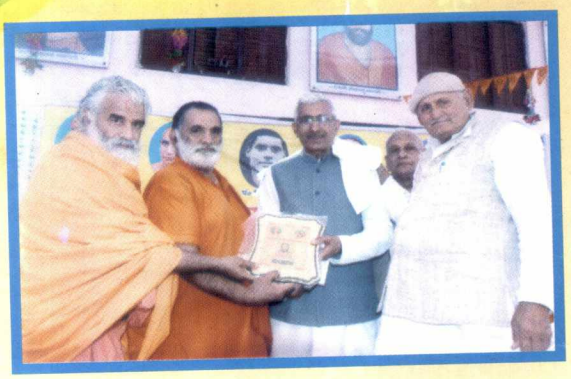

डॉ. जगदेव जी ब्रह्मा को सम्मानित करते हुए चौ. पूर्णसिंह, आचार्य विजयपाल एवं स्वाती धर्मेश्वरानन्द जी

पं. प्रकाशवीर शास्त्री के भानजे श्री शरद त्यागी को सम्मानित करते हुए।

डॉ. स्वामी देवव्रत जी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों से सलामी लेते हुए।

मल्लखम्भ स्तूप प्रदर्शित करते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारी

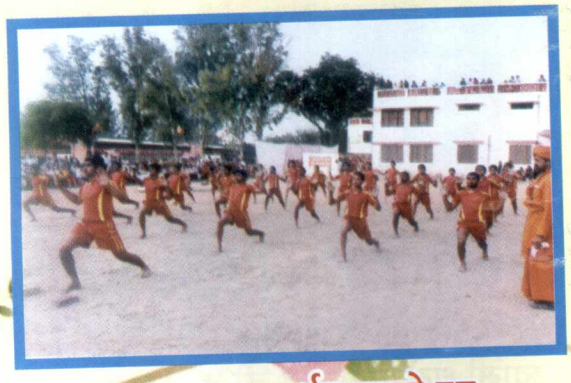

व्यायाम का प्रदर्शन करते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारी

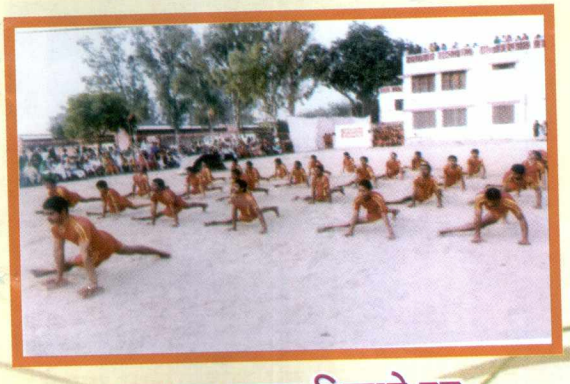

दण्ड का प्रकार दिखाते हुए गुरुकुल के ब्रह्मचारी

आग के गोले से निकलता हुआ
गुरुकुल का ब्रह्मचारी

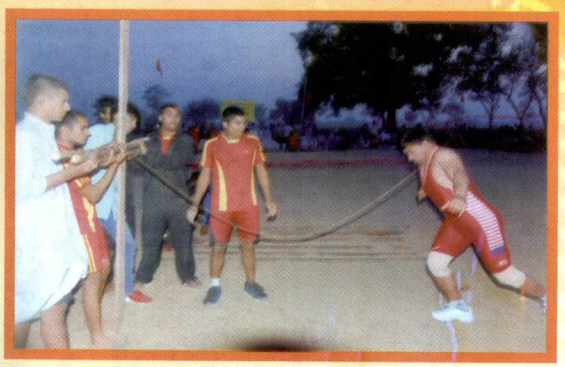

गले से सरिया मोड़ते हुए
श्री नरेश शास्त्री

बेल तोड़ते हुए
श्री नरेश शास्त्री

रस्से पर कमाण्डो की क्रियाप्रदर्शित
करता हुआ ब्रह्मचारी

जिमनास्टिक का प्रदर्शन
करता हुआ ब्रह्मचारी

मल्लखम्भ पर विशेष आसन
करता हुआ ब्रह्मचारी

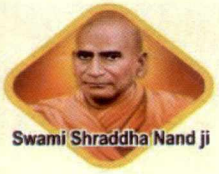

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

**सुधारक लौटाने का पता :-**
**गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103**
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ______________________

स्थान ______________________

______________________

जिला ______________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।